ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(1): 933-934
www.allresearchjournal.com
Received: 20-11-2015
Accepted: 23-12-2015

डॉ. अरविन्द मैन्दोला
सह–आचार्य, चित्रकला, राजकीय महाविद्यालय, बून्दी, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. अरविन्द मैन्दोला
सह–आचार्य, चित्रकला, राजकीय महाविद्यालय, बून्दी, राजस्थान, भारत

राजस्थानी लघुचित्रण परम्पराः सांस्कृतिक जागरण में योगदान

डॉ. अरविन्द मैन्दोला

सारांशः–
भारतीय परिदृश्य में राजस्थान का सांस्कृतिक वैभव बेजोड़ है। राजस्थान के कलात्मक और सांस्कृतिक जीवन से यहां का इतिहास बहुत धनिष्ठ रहा है। प्रागैतिहासिक युग में राजस्थान की कलात्म्क संस्कृति का बीजारोपण हुआ जिसमें मौलिक एकता, राष्ट्रीयता और आन्तर्राष्ट्रीयता के प्रच्छन्न रूप के विकास की प्रक्रियाएँ आरम्भ हुयी। राजस्थान में छठी शताब्दी सम्राटों की सहिष्णु नीति के कारण राजस्थान उनकी सांसकृतिक उपलब्धियों का भागीदा बना। जिनका सम्बन्ध जनजीवन से घनिष्ठता साधे हुये है। राजस्थानी सांस्कृतिक कला परम्परा में लघुचित्रण परम्परा का जन्म राजस्थान में ही हुआ और अन्य भारतीय शैलियों से प्रभावित होती हुयी यह स्वतन्त्र रूप से विकास क्रम में पल्लवित होती रही है।

मूल–शब्दः– सौन्दर्य भावना, कलात्मक अवदान, सहिष्णु नीति, नायिका भेद

प्रस्तावनाः
संस्कृति और इतिहास का ज्ञान साहित्य एवं कला से होता है। कला का उदय मानव की सौन्दर्य भावना का परिचायक है। मानव के विकास क्रम में उसकी सौंदर्य भावना की तृप्ति और रचनात्मकता के कारण ही विभिन्न कलाओं का उदय हुआ जो उसके परिवेश और यथार्थ की वास्तविक स्थिति को प्रकट करती है। राष्ट्र की कलाओं में वहां की सांस्कृतिक कला परम्परा को मूर्त रूप में देख सकते है। भारतीय संस्कृति अपनी प्राचीन परम्परा, विविध संस्कृतियों के संगम तथा अनेक कलात्मक अवदानों के कारण आज संसार के सांस्कृतिक परिदृश्य के साथ ही राष्ट्रीय चेतना की महत्ता का प्रतीक है।

देश के परिदृश्य में राजस्थान का सांस्कृतिक वैभव बेजोड़ है। इस सांस्कृतिक पक्ष की सबसे बडी विशेषता यह है कि इसमें मिलने वाले श्रेय, सौन्दर्य और कल्याण के तत्व तथा संस्कारों की नई प्रेरणा देने की क्षमता आज भी विद्यमान है। इस परिपेक्ष में राजस्थान के कलात्मक और सांस्कृतिक जीवन से यहां का इतिहास बहुत घनिष्ठ रहा है। प्रागैतिहासिक युग में राजस्थान की कलात्मक संस्कृति का बीजारोपण हुआ जिसमें मौलिक एकता, राष्ट्रीयता और अन्तराष्ट्रीयता के प्रच्छन्न एवं अप्रच्छन्न रूप के विकास की प्रक्रियाएँ आरम्भ हुई। राजस्थान में छठी शताब्दी सम्राटों की सहिष्णु नीति के कारण राजस्थान उनकी सांस्कृतिक उपलब्धियों का भागीदार बना। जिनका सम्बन्ध जनजीवन से घनिष्ठता साधे हुये है। पूर्व एवं उत्तर मध्यकालीन राजस्थान की संस्कृति में नरेन्द्र स्वयम् विद्वान तथा कलाप्रेमी थे। इन्होंने अपने–अपने राज्यों में अच्छे कलाओं को आश्रय के सम्पूर्ण राजस्थान के क्षेत्र को सांस्कृतिक केन्द्र बनाया। मध्यकालीन लघुचित्रकला संस्कृति की प्रतिमा को प्रथम और द्वितीय भक्ति के भावों में उन्मीलन करती है। हिन्दु–मुस्लिम कारीगरों ने राजस्थान में मिलजुलकर कलात्मक कार्य किया। उपयोगी कला और ललित कलाओं तथा जीवन शैली में काम आने वाली प्रत्येक निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि राजस्थानी सांस्कृतिक कला परम्परा में लघुचित्रण परम्परा का जन्म राजस्थान में ही हुआ और अन्य भारतीय शैलियों से प्रभावित होती हुई यह स्वतंत्र रूप से विकास क्रम में पल्लवित होती रही है।

राजस्थानी शैली के विकास क्रम में यहाँ की संस्कृति के साथ–साथ प्राकृतिक एवं भौगोलिक संरचना का प्रमुख स्थान रहा है। राजस्थानी लघुचित्रण परम्परा का विकास विभिन्न स्कूलों, रियासतों, शैलियों और उपशैलियों में पल्लवित होता हुआ और सत्रहवीं–अठारहवीं सदी में अपने चरम पर पहुंचा। मेवाड़, मारवाड़, ढूंढाड़ और हाडौती में विभक्त इन चार शैलियों की भौगोलिक संरचना और राजपूत राजाओं की सांस्कृतिक परम्परा यहाँ के लघु चित्रण में सहज ही दिखाई पड़ती है।

गीत–गोविन्द के चित्रण ने मेवाड़ कलम को समृद्ध किया। यहाँ लघुचित्रों के साथ–साथ मीनाकारी, पच्चीकारी भी विकसित हुई। मारवाड़ कला का विकास मूलतः जोधपुर दरबारी शैली के रूप में भी देखा जा सकता है।

इनके प्रारम्भिक लघु चित्रों में ओधनिर्युक्तिवृति (1060 ई.) ज्ञात सूत्र (1130 ई.) पंचशिखा प्रकरण कृति, पाण्डव चरित्र (1418 ई.) 'कल्पसूत्र' प्रमुख रहे है। राजस्थानी सांस्कृतिक चित्रण परम्परा में किशनगढ़ शैली का प्रमुख स्थान रहा है। 'नागरीदास' की रसिकता एवं माधुर्य में 'बनी–ठनी' संसार प्रसिद्ध है। श्याम–श्यामा के रतिभाव के विभिन्न आयाम ही किशनगढ़ शैली के प्रमुख विषय रह है। राधा–कृष्ण तथा भाव चित्रण पर आधारित गीत–गोविन्द, भागवत पुराण एवं रूक्मिणी हरण, नागरीदास के पद, राजसी वैभव, नौका–विहार और प्राकृतिक सौन्दर्य बोध यहाँ के लघुचित्रों में दिखाई देता है पारदर्शी वेशभूषा नागौर–शैली की अपनी निजी विशेषता रही है। जैसलमेर का 'जिन भद्रसूरी ज्ञान भण्डार' के साथ ही ताड़ पत्रीय ग्रंथों, हस्थलिखित ग्रंथों और चित्र पट्टिकाओं के विशा भण्डार भारतीय कला संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। ढूँढाड कलम में राधा–कृष्ण से संबंधित चित्र, नायिका–भेद, राग–रागिनी, बारहमासा नामक विषयों का सृजन किया गया है।

चौहान वंशीय हाड़ाओं का शासन कोटा–बून्दी, झालावाड़ क्षेत्रों में होने के कारण यह क्षेत्र 'हाड़ौती' कहलाता है। बुन्दी के लघुचित्रों में राग–रागिनी, नायिका–भेद, कृष्ण–लीला, रसराज परम्परा के लघु चित्र इस काल में सृजित हुये। कोटा कलम में शिकार दृश्यों के अतिरिक्त रागमाला, बारहमासा, नायक–नायिकाभेद, कृष्ण–लीला से संबंधित लघुचित्र और वल्लभोत्सव चंद्रिका एवं गीता–पंचमेल नामक ग्रंथ कोटा शैली की अनुपम देन है।

राजस्थानी संस्कृति में लघुचित्रण की विशेषताऐं कला का क्षेत्र व्यापक है, समग्र सृष्टि ही उसकी कार्यस्थली है। कला शाश्वत है, किन्तु कला को वर्तमान की सदा की अपेक्षा रहती है। राजस्थानी की सांस्कृतिक परम्परा में लघुचित्रण की अपनी कुछ मौलिक पहचान है। इसकी मूलभूत विशेषता भावभिव्यंजना के साथ आध्यात्मिकता है। राजस्थानी लघुचित्रण में कला का विकास कला के लिये न होकर आत्मस्वरूप के साक्षात्कार या उसे परमतत्व की ओर उन्मुख करने के लिये हुआ है।

''विश्रान्तियस्य सम्भोगे सा कला न कला मता
लीयते परमानन्दे ययात्मा सा परा कला''

सन्दर्भ ग्रन्थः–

1. जगदीश गुप्ता, भारतीय कला का सिंहावलोकन
2. रामचन्द्र शुक्ल, कला तथा आधुनिक प्रवृतियां
3. भूपेन्द्र नाथ दत्ता, इण्डियन आर्ट इन रिलेशन टू कल्चर
4. वाचस्पति गैरोला, भारतीय चित्रकला का इतिहास
5. प्रेमचन्द गोस्वामी, भारतीय चित्रकला का इतिहास
6. अविनाश बहादुर वर्मा, भारतीय चित्रकला